This question paper contains 1 printed page.

B.A. (Sem. - IV)

004441 Roll No.

UG9101

HIN-64T-202

B.A. Three/Four Year (Semester - IV)

EXAMINATION SESSION 2024-25 (Held in Jun. 2025)

(Faculty of Arts)

(Non-Collegiate)

हिन्दी साहित्य

(कथेतर गद्य विधाएँ)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 150

प्रश्नों के उत्तर **लिखने** से पूर्व **प्रश्न–पत्र** पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ – से कुल 04 गद्यांश (एक रचना से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा।

प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।

खण्ड – अ

1. *निम्नलिखित अतिलघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर दीजिए –*

   (i) हिन्दी के किन्हीं तीन नाटककारों के नाम लिखिए।

   (ii) हिन्दी का पहला एकांकी और उसके रचयिता का नाम लिखिए।

   (iii) संस्मरण एवं रेखाचित्र में अंतर लिखिए।

   (iv) 'रक्त कमल' नाटक के तीन पुरुष पात्रों के नाम लिखिए।

(v) 'रक्त कमल' नाटक के लेखक का नाम बताइए।

(vi) 'रक्त कमल' नाटक में कुल कितने अंक हैं?

(vii) रामवृक्ष बेनीपुरी कृत रेखाचित्र संग्रह का नाम लिखिए।

(viii) अज्ञेय कृत यात्रा–संस्मरण की पुस्तकों के नाम लिखिए।

(ix) पाठ्यक्रम में निर्धारित तीनों एकांकियों के नाम लिखिए।

(x) 'रिपोर्ताज' मूलतः किस भाषा का शब्द है?

खण्ड – ब

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

आप, मैं और ये सब अलग–अलग नहीं, एक ही समाज हैं। हमीं देश हैं, राष्ट्र हैं। और यह सच है कि हम सब गरीब हैं, मूल्यहीन हैं, अपाहिज हैं। पर हममें प्राण है, हमारे भीतर कहीं वह अदृश्य स्थान जरूर है जो हमसे रह–रहकर प्रश्न करता है। और हम अपने–आपसे ही अपमानित होकर रह जाते हैं। क्योंकि हम शुभ और सुंदर को उत्तर नहीं देते क्योंकि उसमें फिलहाल कोई लाभ नहीं दिखता, इसलिए हम उत्तर देते हैं सिर्फ अशुभ को ..... असुंदर को।

अथवा

आदमी अपने घोर सत्य का मुकाबला नहीं कर पाता। वह अपने से भागकर किसी असत्य में शरण लेता है। लीडर देश की जनता को मूर्ख बनाकर हमारा नेता बनता है। उद्योगपति समाज का शोषण कर राष्ट्रसेवी–धर्मसेवी का चेहरा बाँधता है और शेष सब उसे उदास देखते रह जाते हैं – साहित्यकार, विचारक, अध्यापक, पत्रकार और वकील। चारों ओर घनघोर असत्य के प्रति कोई विरोध नहीं। कहीं विद्रोह नहीं, जैसे युगों की हमारी गरीबी, फूट और पराजय ने हमारे भीतर के प्रकाश को ही बाँध लिया हो।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

यह हमारे रक्त में है कि हम यथार्थ से अपना मुँह फेरकर खड़े होते हैं, उससे दूर भागते हैं ताकि यथार्थ से हमारा सामना ही न हो, जिससे कि हम बड़ी मौज से ऊँची–ऊँची बातें कर सकें – अपने कल्याण की नहीं, विश्व–कल्याण की। आपने देश की सीमा की नहीं, क्यूबा, कटांगा, लाओस और जर्मनी की सीमा की। अपने समाज की अपावन गरीबी, निर्लज्ज गंदगी और जड़ अंधकार की नहीं, आत्मा और परमात्मा की बातें।

अथवा

अरे यह किस्मत कुछ नहीं होती माँ! आदमी की किस्मत का जिम्मेदार तो आदमी ही है माँ! ईश्वर, चाँद, सूरज, नक्षत्र, इतनी ऋतुएँ, ये पहाड़, ये समुद्र, इतनी विराट प्रकृति, ये एक मनुष्य की सेवा के लिए हैं। ये सब दैवी शक्तियाँ मनुष्य के सुख–आनंद के लिए बनी हैं, सिर्फ मनुष्य ही मनुष्य की समस्या है। यह मनुष्य जैसी समाज की व्यवस्था करेगा, मनुष्य को उसी में रहना पड़ता है।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

मृत्यु तो जीवन का एक मोड़ है। जिस प्रकार एक चौड़ा रास्ता जंगल में एक पगडण्डी होकर छिप जाता है और हमें नहीं दीख पड़ता है, उसी प्रकार मृत्यु के बाद जीवन–पथ भी रहस्य के वन में प्रवेश कर जाता है। सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर का निखरा हुआ रूप है। जैसे सूर्य–मण्डल से दिन फैला हुआ है उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर से यह स्थूल शरीर है। यह सूक्ष्म शरीर हमसे वैसा ही जुड़ा है जैसे रात्रि के अंतिम प्रहर से दिन।

अथवा

मेरी समझ में आ गया है कि अब प्राणों की तृप्ति की चेष्टा व्यर्थ है। विफलता के इस मरुस्थल में अब एक बूँद [illegible] कर खो जायेगी। यदि तुम्हें इसी में संतोष हो कि तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा मेरी मृत देह पर ही अपना जय–स्तम्भ उठाये तो फिर वही सही। .... चलो, यह भी एक प्रकार से अच्छा ही होगा। जिन्होंने मेरे लिए अपने प्राणों की बलि दी, उन्हें मुँह तो दिखा सकूँगा।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ, उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ। लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूँ और किसी से ईर्ष्या नहीं करता। आप भी अगर इतने ही खुश हों तो ठीक – तो शायद आप पहले मेरा नुस्खा जानते हैं – नहीं तो मेरी आपको सलाह है, "जनाब अपना बोरिया–बिस्तर समेटिए और जरा चलते–फिरते नजर आइए।" यह आपका अपमान नहीं है, एक जीवन – दर्शन का निचोड़ है। 'रमता राम' इसलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं; टिकना तो मौत है।

अथवा

नारी के हृदय में जो गंभीर ममता–सजल वीर–भाव उत्पन्न होता है, वह पुरुष के उग्र शौर्य से अधिक उदात्त और दिव्य रहता है। पुरुष अपने व्यक्तिगत या समूहगत राग द्वेष के लिए भी वीर धर्म अपना सकता है और अहंकार की तृप्ति मात्र के लिए भी। पर नारी अपने सृजन की बाधाएं दूर करने के लिए या अपनी कल्याणी सृष्टि की रक्षा के लिए ही रुद्र बनती है। अतः उसकी वीरता के समकक्ष रखने योग्य प्रेरणाएं संसार के कोश में कम हैं। मातृशक्ति का दिव्य रक्षक उद्धारक रूप होने के कारण ही भीमाकृति चण्डी, वत्सला अम्बा भी है, हिंसात्मक पाशविक शक्तियों को चरणों के नीचे दबाकर अपनी सृष्टि के मंगल की साधना करती है।

खण्ड – स

निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

6. हिन्दी के प्रमुख नाटक एवं नाटककारों पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।

अथवा

एकांकी की परिभाषा एवं तत्त्वों की चर्चा करते हुए हिन्दी की प्रमुख एकांकियों पर प्रकाश डालिए।

7. नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'रक्त कमल' नाटक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'रक्त कमल' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालते हुए उसके नायक का चरित्रांकन कीजिए।

8. पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र की आत्मकथा 'अपनी खबर' के आलोक में उनके जीवन–व्यक्तित्व का अंकन कीजिए।

अथवा

'सीमा रेखा' एकांकी की विषयवस्तु का विस्तृत वर्णन कीजिए।

9. 'सरजू भैया' रेखाचित्र के केन्द्रीय पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

रांगेय राघव कृत 'अदम्य जीवन' शीर्षक रिपोर्ताज का सार अपने अपने शब्दों में लिखिए।